

## शांति

शोर बहुत क्यों मचा हुआ है,  
जन जन विचलित होता है।  
मनुज रहे जो झोंपड़ियों में,  
बोझा सबका ढोता है॥

फूट रही चिंगारी चहुं दिस,  
उपवन कानन जलते हैं।  
झुलस रही कोमल पंखुड़ियां,  
हाथ सभी जन मलते हैं॥

मासूमों की दुर्गति होती,  
स्वप्न पूर्ण कब होता है।  
शोर बहुत क्यों मचा हुआ है,  
जन जन विचलित होता है॥

ऐसे हालत देख विश्व के,  
मन के घाव अखरते हैं।  
निर्बल कुचले पिछड़ों के तो,  
ख्वाब सभी बिखरते हैं॥

लगता अपने अंतर्मन से,  
साहस मानव खोता है।  
शोर बहुत क्यों मचा हुआ है,  
जन जन विचलित होता है॥

जाति धर्म हित मानव लड़ता,  
इंसाफ मांगता रहता था,  
कभी वही प्रतिशोध का युद्ध,  
उन्नति को प्रेरित करता था॥

आगे बढ़ने के लालच में,  
धैर्य हर मनुज खोता है।  
शोर बहुत क्यों मचा हुआ है,  
जन जन विचलित होता है॥

सोच मनुज की दुश्मन है अब,  
होती जाती बलशाली।  
यह विनाश का कारण बनती,  
विवश हुए प्रतिभाशाली॥

खतरनाक हथियार बना नर,  
बीज नाश के बोता है।  
शोर बहुत क्यों मचा हुआ है,  
जन जन विचलित होता है॥

पाषाणों का वक्त गया तो,  
मनुज लड़ा था तलवारों से।  
परमाणु हथियार से घातक,  
अब जैविक हथियारों से॥

दुष्ट मनुज से दूर करो ये,  
जग को ये घातक होंगे।  
अगर हाथ ये इनके आयें,  
भस्मासुर साबित होंगे॥

इनके कारण आज विश्व ये,  
मन ही मन में रोता है।  
शोर बहुत क्यों मचा हुआ है,  
जन जन विचलित होता है।

## बढ़ती असमानतायें

ये वर्तमान सब देख रहा,  
पुरखों का इतिहास हमारा।  
केवल ज्ञान की कमी ना थी,  
रहा असमान नजरिया हमारा॥

यूं बढ़ती रही असमानता,  
सारे समाज धर्म अर्थ में,  
फिर फर्क नहीं कर पाये हम,  
किसी भी अर्थ या अनर्थ में॥

यूं मनुज रोकता चला गया,  
सर्वांगीण विकास हमारा।  
ये वर्तमान सब देख रहा,  
पुरखों का इतिहास हमारा॥

अगर रोक पायें हम इसको,  
तो फिर मिलकर रोका जाए।  
या सहनशील बनकर के,  
दिया अगर कुछ मौका जाए॥

जगत से क्या सहचरों से भी,  
फर्क हुआ था खास हमारा॥  
ये वर्तमान सब देख रहा,  
पुरखों का इतिहास हमारा॥

अब सबको गले लगायें हम,  
सबसे प्रेम निभाया जाये।  
बाह्य भिन्नता हो न नजरिया,  
ना डर नियंत्रण लाया जाये॥

ये जंग कभी तो रुके यहां,  
कभी अमन जग लाया जाये।

कोशिश करें हम सभी मिलकर,  
जग में चमन खिलाया जाये॥

दूर हुए हम मानव से भी,  
कोई ना था पास हमारा।  
ये वर्तमान सब देख रहा,  
पुरखों का इतिहास हमारा॥

असमानता ही कारण है,  
ये वैमनस्यता लाती है।  
भले रहे वो दर्शन कोई,  
ये मानव को खा जाती है॥

खत्म करना ये असमानता,  
या फिर पूर्ण रूप से अपना लो।  
फिर कौन सोच यह रोकेगा,  
अब समय पूर्व ही दफ़ना लो॥

दंश सभी का झेला हमने,  
भल सती प्रथा व बाल विवाह।  
ज्ञान गंवाई है बहुतों ने,  
हो मृत्यु भोज व प्रेम विवाह॥

मनुज प्रगति सदा मांगती,  
पुरातन सोच की बलिदानी।  
भला जगत हो जब हम सोचें,  
जब हम छोड़ेंगे मनमानी॥

मानवता जग में आयेगी,  
जब होगा अहसास हमारा।  
ये वर्तमान सब देख रहा,  
पुरखों का इतिहास हमारा।

## जलते दीये

ये जीवन तो क्षण भंगुर है,  
जैसे एक दीप जलता है।  
यह कविता उसे समर्पित है,  
जो परहित जीता मरता है॥

अब तो आंखें खोल मनुज ये,  
जीयो प्रकाश जग लाने को।  
कल्याण करो तुम ओरों का,  
है जीवन ये ज्योति जगाने को॥

प्रेम भाव की खातिर ही,  
जो सबका मंगल करता है।  
ये जीवन तो क्षण भंगुर है,  
जैसे एक दीप जलता है॥

अगर जले ना ये दीपक तो ,  
भल सुरक्षित हो तेल बाती।  
पर अर्थहीन जिंदगी होगी,  
जो काम किसी के ना आती॥

धन्य धन्य वो राजा शिवि जो,  
त्याग कबूतर हित करता है।  
ये जीवन तो क्षण भंगुर है,  
जैसे एक दीप जलता है॥

अब कैसा समय आ गया है,  
सबको अपशब्द सुनाते हैं।  
अब आधुनिकता के नाम पर,  
सब कृत्रिमता अपनाते हैं॥

चहुं दिस प्रकृति प्रेम बिसराया,  
नर तकनीक प्रेम करता है।  
ये जीवन तो क्षण भंगुर है,  
जैसे एक दीप जलता है॥

इस तकनीकी के कारण ही,  
मनुज संवेदना खोती हैं।  
हर मानव में अब मानवीय,  
भावना बहुत कम होती हैं॥

धन की लालसा मनुज को,  
भीतर से खोखला करती है।  
ये धकेले तम के गर्त में,  
तभी शिक्षा नीति अखरती है॥

खुद जला तेल , बाती निज की,  
जो ज्ञान उजाला भरता है।  
यह जीवन तो क्षण भंगुर है,  
जैसे एक दीप जलता है॥